रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

Un believable
आइरिस विज्ञान की एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page Price only ₹40 + डाक खर्च
बेहतरीन छपाई व मज़बूत बाइडिंग में
केवल कुछ ही प्रतियां शेष
अभी नहीं लिया तो नहीं ले पाओगे
आज ही ऑडर बुक करें
बुकिंग के लिये लाइन्स खुली हैं
9415074806,9450153215,
9450791546,9415486103
या email करें
ehmaik@gmail.com

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –4 ● कानपुर 16 से 28 फरवरी 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी अब निर्णायक मोड़ पर

- ✓ शीघ्र ही निस्तारित होगा मामला
- ✓ अनिर्णय के लिये नहीं कोई स्थान
- ✓ सुधरने का दिया जायेगा मौका
- ✓ ठीक से कार्य करने के हैं अवसर
- ✓ व्यक्तिगत नहीं सार्वजनिक है पैथी
- ✓ पहला प्रयास सबका साथ
- ✓ नहीं तो एकला चलो रे .....

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मामला बहुत दिनों से अनिर्णय की स्थिति में पड़ा हुआ है कभी मामला बनता है तो कभी बिगड़ जाता है बनने बिगड़ने का यह खेल पिछले 64 वर्षों से जारी है 64 वर्ष का समय बहुत लम्बा होता है पीढ़ियाँ बदल जाती हैं। कुछ लोग जो बहुत जुझारू थे वह अब हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके कार्य प्रेरणा के रूप में हमें अभी भी प्रेरित करते रहते हैं, इसी प्रेरणा से ओतप्रोत होकर हम निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं तमाम उतार चढ़ाव के बाद आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी अपनी सबसे मज़बूत स्थिति में है शासकीय और वैधानिक अधिकार भी प्राप्त हो चुके हैं और इन्हीं प्राप्त अधिकारों के आधार पर अधिकारिता पूर्वक कार्य हो रहा है, परन्तु जो अपेक्षित सुधार होने चाहिये वह अभी भी नहीं हो पा रहे हैं जो धीरे–धीरे नई स्थिति निर्मित करते जा रहे हैं अधिकार प्राप्त हुए राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 6 वर्ष व प्रान्तीय स्तर पर 5 वर्ष पूरे हो चुके हैं इतनी लम्बी अवधि बीत जाने के बाद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जो संवैधानिक स्तर होना चाहिये उसके लिए हम भी संघर्षरत हैं यह संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति की भाँति शासकीय संरक्षण प्राप्त नहीं हो जायेगा इस संरक्षण को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की भारत सरकार से अधिकार प्राप्त एक मात्र इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व प्रदेश स्तर पर शासकीय आदेश प्राप्त व सम्पूर्ण प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा व अनुसंधान को संचालित करने वाली एक मात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने कमर कस ली है। पिछले दिनों दोनों संगठनों के शीर्ष अधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में आड़े आने वाले विभिन्न पहलुओं पर गम्भीरता से विचार किया गया कई चक्रों के विचार मंथन के बाद सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी की व्यक्तिगत नहीं है, इस चिकित्सा पद्धति का लाभ समाज के हर वर्ग को मिलना चाहिये, इसलिए ऐसे तत्व जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में बाधा बन रहे हैं उनसे कड़ाई से निपटा जाये बैठक में उपस्थित सभी चिन्तकों ने एक स्वर से इस बात का समर्थन किया कि इन्तेजार बहुत हो चुका है अब इन्तेज़ार में समय नष्ट नहीं करना चाहिये। ऐसी एक ऐसी नीति निर्धारित की जाये जो कि सबको समाहित करती हुई इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास का मार्ग प्रशस्त करे, यह इसलिए आवश्यक हो गया है क्योंकि यदि ज़्यादा समय मात्र इन्तेज़ार में गवांया गया तो चिकित्सकों का मनोबल गिरता है, साथ–साथ बदलती हुई परिस्थितियों में स्वरूप भी बदल जाता है।

आज स्थिति साम्य है शासकीय सहयोग भी है और स्थितियां भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पक्ष में हैं अस्तु हर बिन्दु को दृष्टिगत रखते हुए इसपर कार्य अविलम्ब प्रारम्भ कर देना चाहिये।

जैसे ही यह निर्णय लिया गया तो राष्ट्रीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व प्रदेश स्तर पर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 सक्रिय हो गये हैं सबसे पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा उन लोगों को सचेत किया जायेगा जो लगातार विभिन्न क्षेत्रों में निरन्तर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसमें सबसे प्रमुख क्षेत्र है औषधि निर्माण का क्षेत्र। पिछले 5 वर्षों के अन्दर पूरे देश में एकदम से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के औषधि निर्माताओं ने जन्म ले लिया है और सब अपने–अपने स्तर से अपने उत्पादन व अपनी कार्य–विधि को सही ठहरा रहे हैं, जोकि किसी भी स्तर से तर्कसंगत नहीं है यह लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्राचीनता से छेड़–छाड़ कर रहे हैं और तो और यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रहे हैं, ऐसा करके वह अपने लिए तो लाभ अर्जित कर रहे हैं लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जितना नुकसान कर रहे हैं उसका उन्हें शायद अनुमान नहीं है। एक तरफ़ तो मान्यता पाने की लड़ाई लड़ी जा रही है वहीं दूसरी तरफ़ इस लड़ाई को लड़ने के लिए जो तथ्य प्रस्तुत किये जा रहे हैं वह इस लड़ाई को कमज़ोर कर रहे हैं, वैज्ञानिकता के नाम पर जो मखौल उड़ाया जा रहा वह दिन प्रतिदिन गम्भीर होता जा रहा है पूरे देश में मान्यता दिलाने के नाम पर जो खेल खेला जा रहा है वह एक न एक दिन घातक होगा और उस विस्फोटक का प्रदूषण हम सबको प्रभावित करेगा, अस्तु बिना किसी विलम्ब के इन सब बातों पर लगाम लगाई जायेगी हमारे बीच बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रबल समर्थक व अनुवाकार बनते हैं और यह दावा करते हैं कि वही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों का बचाव करेंगे। शायद इन लोगों के मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति वह विश्वास नहीं था तभी तो ऐसे लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ–साथ अन्य पैथी के शरण में जाकर अपने आपको ज़्यादा सुरक्षित समझा ! जो व्यक्ति पहले अपनी सुरक्षा के लिए जगह बदल रहा हो वह इलेक्ट्रो होम्योपैथों की सुरक्षा कैसे करेगा ? ऐसे लोगों को अपने विचार में परिवर्तन करना चाहिये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संघर्ष की मुख्यधारा से जुड़कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को और तेज़ करें। परिवर्तन के इस कालचक्र में हमें अपनी निगाह बड़ी पैनी रखनी है पता नहीं अपने हित के लिए कौन क्या झूठ बोलने लगे ! यह बात सत्य है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आदेश सबके लिए है परन्तु इस आदेश का उपभोग वही कर सकता है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया से अनुमोदित हो, कुछ लोग मनमानी कर रहे हैं ऐसे लोगों को समय रहते अपने गलत कार्यों पर स्वंय अंकुश लगा लेना चाहिये तथा जो आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में चलाया जा रहा है उससे जुड़ जाना चाहिये, जो लोग अभी भी मुख्य धारा में नहीं जुड़ेंगे उन्हें आने वाले समय में कोई लाभ मिलने वाला नहीं है क्योंकि आन्दोलन अब अपने चरम पर है या दूसरे शब्दों में यह कहें कि धीरे–धीरे यह आन्दोलन अब निस्तारण की तरफ़ बढ़ रहा है अस्तु वह सारे के सारे लोग जो अपने आप को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए समर्पित बताते हैं उन्हें तत्काल आन्दोलन की सही धारा बनानी चाहिये, धीरे–धीरे भारत सरकार का नियन्त्रण इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर बढ़ता जा रहा है मान्यता की पूर्व की स्थिति जिसे हम नियमन की स्थिति कहते हैं निर्मित हो रही है इसलिए ऐसे निर्माण में कोई भी बाधा स्वीकार नहीं होगी।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास से ही सबका विकास।

पाठ्यक्रम निर्धारण का कार्य युद्धस्तर पर प्रारम्भ

देश में प्रचलित मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए जिन सुधारों और संशोधनों की आवश्यकता थी उसपर कार्य प्रारम्भ हो गया है। प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गणना मान्यता प्राप्त पद्धतियों के समकक्ष हो यह प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता थी इस हेतु बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने तत्काल निर्णय लेते हुए यह तय किया कि जो कमियां हमारे पाठ्यक्रम में हैं उन्हें दूर की जाये और मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के स्तर का पाठ्यक्रम निर्मित कर संचालित किया जाये इस हेतु कई चक्रों की बैठकों के बाद यह निर्णित हुआ कि पाठ्यक्रम की अवधि 4+1 होगी अर्थात चार साल शैक्षिणिक गतिविधियां होंगी और एक साल प्रयोगात्मक/क्रियात्मक जानकारी दी जायेगी, यह इन्टर्नशिप की अवधि किसी पी0एच0सी0/सी0एच0सी0 या ज़िला स्तर के चिकित्सालय में पूरी करवायी जायेगी। पाठ्यक्रम के पुनर्निर्धारण हेतु एक उच्च स्तरीय समिति का गठन कर दिया गया है यह समिति वर्तमान में संचालित हो रहे पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन करेगी।

हर बिन्दु पर चिन्तन करने के बाद जो कुछ जोड़ने के काबिल है उस अंश को जोड़ा जायेगा तथा जिन विषयों की अवधि बढ़ानी होगी उसपर भी विचार किया जायेगा।

कमेटी ने अपना काम प्रारम्भ कर दिया है युद्ध स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारण का कार्य प्रारम्भ है पूराना पाठ्यक्रम और नये विषयों के जोड़ने पर एक विशेषज्ञ समिति समीक्षा करेगी और समीक्षा के बाद बोर्ड को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

रिपोर्ट आ जाने के एक पक्ष के अन्दर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इस पाठ्यक्रम को लागू करने की संस्तुति करेगी, पाठ्यक्रम का नाम भी अनुमोदित हो चुका है यह पाठ्यक्रम डिग्री स्तर का होगा और पूरी तरह से 25 नवम्बर, 2003 में पारित भारत सरकार के आदेश के अनुरूप होगा।

चुनाव सही करना है

इस समय पूरे उत्तर प्रदेश में हर तरफ़ चुनावी बयार बह रही है जिसे भी देखो वह चुनावी रंग में ही डूबा है, हर तरफ़ चुनावी चर्चा है और इस चर्चा के परिदृष्य में हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी देखते हैं, जब चुनाव प्रारम्भ होने वाले थे और चुनावी समर में कूदने की तैयारी चल रही थी तब ऐसा लग रहा था कि शायद आठ–दस इलेक्ट्रो होम्योपैथ प्रदेश व उत्तराखण्ड से ताल तो ठोकेंगे ही परन्तु ज्यों–ज्यों समय बीतता गया और नामांकन व नाम वापसी की तिथि आने व गुज़रने लगी तो वह लोग मैदान से ही गायब हो गये जो फेसबुक व वाह्सएप पर बहुत तेज़ी से छाये थे अब तो चन्द लोग ही मैदान में बचे हैं यह जो हमारे प्रदेश में चुनाव हो रहा है इसमें हर दल के प्रत्याशी प्रदेश के विकास के लिये अपने–अपने स्तर से वादे कर रहे हैं और जनता को यह समझाने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं कि यदि आपका समर्थन मिला और वे विधायक बन गये तो विधायक जी आपकी कसौटी पर खरा उतरने का पूर्ण प्रयास करेंगे, यद्यपि कटु सत्य तो यह है कि कोई भी कसौटी पर पूरा खरा न तो आजतक उतरा है और न ही आगे कोई उतरने वाला है। जो दल प्रदेश में अपनी सरकार बनने पर तरह–तरह की चीजें मुफ्त में बांटने के वादे भी कर रहे हैं पर किसी ने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कोई बात नहीं की है।

छोटे–छोटे दलों में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कोई चिन्ता नहीं है जबकि प्रदेश में लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ इसी चिकित्सा पद्धति से कार्य करते हुये जनता जनार्दन की सेवा में लगे हुये हैं एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथों की इतनी संख्या है कि कम से कम प्रदेश में पाँच विधायक तो अपनी क्षमता से ही बनवा सकते हैं। हमारी बात कोई क्यों नहीं उठाता ?यह सोचने का विषय है, अभी जब चुनाव पूर्ण हो जायेंगे, सरकार बन जायेगी तब हमारे ही कुछ साथी बड़े दम्भ से यह कहेंगे कि इस प्रत्याशी को तो मैंने ही जितवाया है, मज़ा तो तब आता है जब हमारे साथी बड़े–बड़े नेताओं से अपने सम्बन्धों की बात बखान करते हुये नहीं थकते हैं और तो और उनकी बातों में इतना अहं होता है कि वह बड़े गर्व से अपने साथियों को बताते हैं कि हमारे अमुक विधायक जी मंत्री बन गये हैं, मुलाकात करेंगे, बस दो–चार मुलाकातों में ही हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी का काया–कल्प करा देंगे। उनकी इस लच्छेदार बातों से तो यह लगता है कि जैसे हर तरफ़ उनका ही जलवा है लेकिन हमें देखते–देखते कमसे कम तीन दशक तो गुज़र ही गये हैं आज तक कुछ नज़र नहीं आया !

कुछ लोग तो यह दावा करेंगे कि हमने इतने बिल लोकसभा में लगवा दिये हैं, अमुक तिथि को बिल पटल पर भी आ रहा है ,परन्तु जो तिथि बताई जाती है उस दिन न तो सदन चल रहा होता है और न ही सदन में कोई आपात बैठक। हम तब भी मूर्ख बनते थे और यदि बुद्धि से काम नहीं लिया तो आगे भी निश्चित इनकी बातों से मूर्ख बनेंगे अतएव हम सब को जागरुक होना है और यदि भविष्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कल्याण वास्तव में करना है तो हमें अपनी बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग करते हुये ऐसे लोगों का चुनाव करें जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक भला चाहते हों।

केवल सोशल मीडिया पर अपनी फोटो डाल देने से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला नहीं होने वाला है, कुछ लोग तो फोटो दिखाने के इतने शौकीन हैं कि वर्षों पुरानी फोटोग्राफ डाल कर हमारे सीधे–साधे, भोले–भाले इलेक्ट्रो होम्योपैथों को दिशाभ्रमित करते रहते हैं। एक बार पुनः कुछ लोगों के समूह ने इस बजट सत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता सम्बन्धी बिल पर फिर से अपनी कसरत शुरु कर दी है और अपने आपको सोशल मीडिया में इस प्रकार से प्रचारित कर रहे हैं कि मानो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सच्चे हितैषी वही हैं।

सच बात तो यह है कि पूरे देश में विभिन्न संगठनों के कुछ लोग एकत्रित होते हैं और इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य अपने आपको स्थापित करने के लिये तरह–तरह के कार्य करते हैं इस समूह में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ऐसे संगठन का प्रतिनिधित्व करता हो जिसे राज्य स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर शासकीय आदेश प्राप्त हो। इनमें से अधिकांश तो ऐसे हैं जिनके आवेदन को सरकार ने ठुकरा दिया है अब यह बेचारे अपनी साख बचाने के लिये कुछ न कुछ करते रहते हैं, अब निर्णय आप पर है !

तथाकथित वैज्ञानिकों से बचें !

पुरानी कहावत है कि.....
घर को लगी आग !
घर के ही चिराग से !!

और कहीं यह मुहावरा सत्य साबित होता है या नहीं हमें इसपर नहीं जाना परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर यह मुहावरा शतप्रतिशत सत्य उतरता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जो भी दुर्दशा है उसके पीछे हमारे अपने साथी ही हैं। उनके किये कार्य लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पीछे की तरफ़ ढकलते जा रहे हैं, सामान्य रूप में तो आदमी ऐसे कार्य करता है जिससे कि पिछले इतिहास पर चारचाँद लगते हुए नये गौरवशाली काल का निर्माण हो, हमारे कुछ साथी निश्चित रूप से इस तरफ प्रयास भी कर रहे हैं लेकिन उनके द्वारा जो प्रयास किये जा रहे हैं वह वर्तमान में उनके लिए लाभकारी भले हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए आगे अच्छे परिणाम देने वाले नहीं हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लड़ाई ज़्यादा मज़बूती से तभी लड़ी जा सकती है जब हम इस लड़ाई की लम्बाई सिद्ध करें इलेक्ट्रो होम्योपैथी 19 वीं शताब्दी से अस्तित्व में है, 150 वर्ष से ज़्यादा का इसका इतिहास है, इसकी प्रमाणिकता वर्षों पुरानी है, इसका आधार नवीन न होकर पुरातन है, सैकड़ों इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने अपनी योग्यता से इस चिकित्सा पद्धति को बढ़ाया है। भारत ही नहीं भारत के बाहर के लोगों ने भी इस चिकित्सा पद्धति के विकास में अपना योगदान दिया है, मैटी के बाद जिन लोगों ने भी इस चिकित्सा पद्धति के लिए काम किये हैं उन्होंने अपने विचार इसमें जोड़े हैं, किसी ने यह दावा नहीं किया है कि मैटी से हट कर उन्होंने कोई कार्य किया है, विज्ञान निरन्तर प्रगति चाहता है और इसमें प्रगति तभी हो सकती है जब इस विषय पर पूरी तन्यमयता से कार्य किया जाये।

भारत वर्ष में जिन लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बढ़ाया चाहे वह डा0 कुलकर्णी हों या डा0 सिन्हा सभी ने मैटी के सिद्धान्तों पर चलते हुए कार्य किया और सफलता अर्जित की, किसी ने यह दावा नहीं किया कि उन्होंने मैटी से इतर कोई कार्य किया है। किसी भी चिकित्सा विज्ञान का अपना आधार होता है, अपने सिद्धान्त होते हैं अपनी मैटेरिया मेडिका होती है, अपनी फार्मेसी होती है, उसी पर कार्य किया जाता है समय और आवश्यकता के अनुसार नया जुड़ाव तो किया जा सकता है परन्तु नये के लिए पुराने को बिल्कुल हटा दिया जाये यह देर सबेर आत्मघाती ही होता है। वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विडम्बना है कि पिछले 10–15 वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ ऐसे तत्वों का प्रवेश हो चुका है कि जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्राचीनता व उसके मूल स्वरूप को नष्ट कर देना चाहते हैं। ऐसे तथाकथित वैज्ञानिक जिनका की हमारे साथियों ने हृदय से इसलिए स्वागत किया था कि वर्षों से रूकी विकास की गति को हमारे यह साथी अपने प्रयासों से गति देंगे। किसी ने यह नहीं सोचा था कि जिन लोगों पर हम भरोसा कर रहे हैं कल वही लोग इतने मदान्ध हो जायेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अस्तित्व पर ही चोट करने लगेंगे, जब कोई चीज़ शुरू की जाती है तो प्रारम्भ के कुछ दिनों में उनकी वास्तविकता समझ में नहीं आती है परन्तु धीरे–धीरे इन व्यक्तियों की सच्चाई सामने आने लगती है, लगभग 150 वर्षों के लम्बे सफ़र को हमारे तथाकथित वैज्ञानिक एक झटके में अपने से अलग कर देते हैं।

वह यह भूल जाते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आज तक जो कुछ भी न्यायालय स्तर पर या सरकार के स्तर पर प्राप्त होता रहा है उसके पीछे इलेक्ट्रो होम्योपैथी का लम्बा इतिहास ही रहा है। जो व्यक्ति इस इतिहास को नकार रहे हैं वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्थान पर किसी नई पद्धति की स्थापना चाहते हैं, मैटी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की अवहेलना उनके द्वारा निर्मित औषधि निर्माण विधि का मज़ाक उड़ाना और यह कहना कि विकल्प पौधों से भी उसी गुणवत्ता की औषधियों का निर्माण हो सकता है जिस स्तर की औषधियों का निर्माण मैटी अपने जीवन काल में करते थे। परिवर्तन हो सकता है परिवर्तन स्वीकार भी किया जा सकता है परन्तु ऐसा परिवर्तन कदापि स्वीकार नहीं किया जा सकता जो सिद्धान्तों से हटकर हों ! वह हमारे मूल स्वरूप पर कुठाराघात कर रहा हो। आज हमारे साथी मान्यता की बात करते हैं मान्यता की लड़ाई भी लड़ रहे हैं और मान्यता का सबसे अहम पहलू है उस चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिकता, उस पर हमारे वैज्ञानिक जो तथ्य प्रस्तुत करते हैं वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के न होकर ऐसा लगता है कि हमारे यह साथी शायद किसी नई पद्धति के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। हम जब मान्यता का दावा सरकार के पास करते हैं तो सरकार प्रथम दृष्टिया यही जानने का प्रयास करती है कि जिस चिकित्सा पद्धति की मान्यता की बात की जा रही है वे कितनी जनोपयोगी है ? तथा उसे कितना जनसमर्थन प्राप्त है ? सरकारें यह भी जानना चाहती हैं कि इस चिकित्सा पद्धति में कितने कार्य हुए हैं ? तथा क्या वास्तव में सामान्य जन को इस चिकित्सा पद्धति से लाभ मिला है ? यही सारी बातें किसी भी पद्धति की मान्यता का आधार बनते हैं यह सत्य है और सरकार भी इसको जानती है कि बिना शासकीय संरक्षण के किसी भी चिकित्सा पद्धति का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। चतुर्मुखी विकास के लिए यह आवश्यक होता है कि उस पद्धति का हर अंग प्रायोगिक हो और यथार्थ के धरातल पर सत्य भी साबित हो लेकिन वर्तमा परिस्थितियां ऐसी हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वास्तविकता पर ही ग्रहण लगा रही हैं हमारे साथी यह लगातार प्रचारित कर रहे हैं कि जो मैटी का सिद्धान्त था वह गलत था और जो सिद्धान्त वह दे रहे हैं वही सही है और यहीं से शुरू होती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विघटन की गाथा। इसलिए हमारे जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नायक हैं उन्हें हम गौण करके कदाचित कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं, नकली खुशबू की महक या कागज के फूल बहुत देर तक सुगन्ध नहीं दे सकते हैं इसी तरह से यह छदम धारणायें बहुत देर तक स्थान नहीं पा सकती हैं इनके लिए अस्तु किन्तु या परन्तु में भी स्थान नहीं होता लेकिन जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वास्तविक समर्थक हैं उन्हें विवेक का प्रयोग करना होगा और इस तरह के लोगों से स्वयं को बचाना होगा और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी बचाना होगा आने वाले समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि हमें यह सिद्ध करना होगा कि यह चिकित्सा पद्धति कितने वर्षों से उपेक्षित है। हमें सरकार के सम्मुख बल पूर्वक यह बात सिद्ध करनी होगी कि सरकारों द्वारा लगातार इस चिकित्सा पद्धति की उपेक्षा की जा रही है और इसी उपेक्षा के कारण हमारे साथी अपनी प्रतिभा का भरपूर प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं जिससे कि समाज को इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का वास्तविक लाभ नहीं मिल पा रहा है, यदि सरकार समय रहते इस विधा को शासकीय संरक्षण नहीं देती है तो जनता बहुत बड़े लाभ से वंचित रह जायेगी, यह बात बातों से नहीं बनती इसकी पुष्टि के लिए हमें ठोस और मज़बूत प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे हमें यह बताना होगा कि हमारे पूर्ववर्ती चिकित्सकों द्वारा कितने काम किये जा चुके हैं,उन कार्यों से जनता को कितना लाभ मिला ह? परन्तु कोई सरकारी इकाई गठित न होने के कारण हमारे कार्यों का न तो मूल्यांकन होता है और न ही सरकार की दृष्टि इस पर पड़ती है !

हमें सरकारी इकाइयों से जुड़ना होगा

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक ऐसा आन्दोलन है जिसकी गति पल–पल बदलती रहती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रादुर्भाव से लेकर आजतक इस आन्दोलन में तमाम उतार चढ़ाव देखे हैं, कई परिवर्तन हुए कुछ बदले ! कुछ जुड़े !! समय ज्यों–ज्यों बढ़ा इस आन्दोलन का स्वरूप भी बदला, 150 वर्षों का लम्बा इतिहास ओढ़े हुए यह आन्दोलन आज भी अपनी पूर्ण स्थिति को नहीं पा सका, यह अलग बात है कि इस आन्दोलन के स्वरूप में तरह तरह के परिवर्तन हुए हैं कभी नाम में परिवर्तन तो कभी औषधिनिर्माण में परिवर्तन, इन सारे परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी निरन्तर आगे बढ़ रही है, परन्तु भारत की बात क्यों करें सारे विश्व में जहाँ–जहाँ भी यह चिकित्सा पद्धति व्यवहार में लायी जा रही है वहाँ पर अभी भी आन्दोलन की शक्ल में स्थान तलाश रही है।

कुछ राष्ट्र ऐसे हैं जहाँ स्थानीय सरकारों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति को संचालन की मौन स्वीकृति है, जबकि भारत जैसे विशाल राष्ट्र में इस चिकित्सा पद्धति के विधि सम्मत ढंग से संचालित होते रहने के लिए शासकीय आदेश सहयोग व समर्थन प्राप्त है परन्तु इतना होने के उपरान्त भी भारत के हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथ जिस प्रतीक्षा में हैं वह प्रतीक्षा समाप्त होने का नाम नहीं ले रही है, अक्सर यह कहा जाता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य जनप्रभावी हैं जनता उनका लाभ ले रही है परन्तु इतना सबकुछ होने के उपरान्त भी जो सरकारी संरक्षण हमें मिलना चाहिये उस संरक्षण की प्रतीक्षा में हम सब आज भी हैं। हम जब कभी एकान्त में बैठते हैं इस विषय पर चिन्तन करते हैं कि इतना कार्य और इतने प्रयासों के उपरान्त भी इस चिकित्सा पद्धति की उपेक्षा क्यों है ?बहुत सारे बिन्दुओं पर विचार करने के बाद हमारा मन इसी निर्णय पर आकर टिकता है कि हमारी उपेक्षा का कारण यह है कि हमने कभी भी अपने कार्यों का प्रमाणिक स्तर तैयार नहीं किया। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब तक सरकार की कृपा दृष्टि नहीं होती है तब तक कुछ भी प्रगति नहीं हो सकती है।

डा0 मैटी साहब ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति अविष्कृत की, सारी दुनिया को यह बताने का प्रयास किया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति लाभकारी है परन्तु लोगों ने मैटी की नहीं सुनीं यह तो समय की बात थी कि जर्मनी के किसी एक क्षेत्र में डायरिया इस कदर फैला कि उस पर नियन्त्रण मुश्किल हो गया, सामान्य जन परेशान थे, तब मैटी साहब ने स्थानीय प्रशासन से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता का दावा ठोका, परिस्थितियां विपरीत थीं, जनता परेशान थी, तब स्थानीय प्रशासन ने मैटी साहब को इस बात की अनुमति दी कि वह अपनी औषधियों का प्रयोग जनता पर कर सकते हैं।

मैटी साहब ने समय का लाभ उठाते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का प्रयोग किया और उपयोगिता सिद्ध की, मैटी के इस एक प्रयास ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने में महत्ती भूमिका निर्वाहन किया। जो लोग कल तक डा0 मैटी और उनकी पद्धति इलेक्ट्रो होम्योपैथी का उपहास करते थे आज वही उनके समर्थन में खड़े थे। लिखने का तात्पर्य यह है कि जन समर्थन के लिये सत्ता व शासन का सहयोग बहुत आवश्यक है, ऐसा नहीं है कि भारतवर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सत्ता का समर्थन नहीं मिला यहाँ भी मिला है और आगे भी मिलता रहेगा परन्तु सहयोग के लिये हमें कार्य करने पड़ते हैं। थोड़ा सा फ्लैशबैक में जायें तो आपको स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा कि किस प्रकार से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय सहयोग प्राप्त हुआ था।

देश के स्वतन्त्र होने के तत्काल बाद जब देश में चिकित्सा पद्धतियों का इतना विकास नहीं हुआ था आयुर्वेद का ही हर जगह बोल–बाला था एलोपैथी भी अपने प्रगति के पथ पर अग्रसर थी, उस समय अनेक ऐसी पद्धतियाँ जिनको उस समय तक शासकीय संरक्षण प्राप्त नहीं था, ऐसी पद्धतियों ने अपनी योग्यता की आवाज़ बुलन्द की और उनकी यह आवाज तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरु तक पहुँची तब नेहरु जी ने हर चिकित्सा पद्धति को अपनी–अपनी योग्यता सिद्ध करने का अवसर दिया, यह अवसर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी प्राप्त हुआ तब पं0 जवाहर लाल नेहरु ने उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व0 गोविन्द बल्लभ पंत को निर्दिष्ठ किया कि वे अपने चिकित्सा विभाग के अधिकारियों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता एवं योग्यता सिद्ध होने के प्रमाण प्राप्त करें। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कानपुर के तत्कालीन सिविल सर्जन (आज का सी0एम0ओ0) को निर्देशित किया कि आप अपनी देख–रेख में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तरफ से जो दावे प्रस्तुत किये गये हैं उन्हें जाँचें एवं निरीक्षणोपरान्त जाँच आख्या सरकार को प्रस्तुत करें। हमारे पाठक यह सोच रहे होंगे कि इतने बड़े देश में यह अवसर उत्तर प्रदेश राज्य को ही क्यों मिला ?तो आप अवगत हो जायें कि प्रारम्भ से ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन का प्रवाह उत्तर प्रदेश से और विशेषतः उस समय उत्तर भारत का मैन्चेस्टर कहलाने वाला शहर कानपुर से ही होता था एवं आज भी यह परम्परा जीवित है। सिविल सर्जन के निर्देश पर दावा करने वाले चिकित्सक को कुछ कुष्ठ के रोगी दिये गये और कहा गया कि इन रोगियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से उपचार देतें हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध करें, (स्मरण रहे कि सारे रोगियों को एलोपैथिक चिकित्सकों ने ला इलाज करार दिया था) चिकित्सक महोदय ने सरकार की चुनौती को स्वीकार किया एवं सफल परिणाम दिये इन्हीं परिणामों का उपहार था कि 27 मार्च, 1953 को प्रथम अर्धशासकीय पत्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जारी हुआ। यह गरिमामयी उपलब्धि किसी और ने नहीं अपितु हम सब के प्रेरणास्रोत स्व0 डा0 नन्द लाल सिंहा ने अर्जित की थी और यह अर्धशासकीय पत्र इस बात को प्रमाणित करता है कि आज से 64 वर्ष पूर्व जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतना विकास नहीं हुआ था तब भी अपनी श्रेयस्कर भूमिका में थी।

यहां बताने का तात्पर्य यह है कि कार्य अपनी प्रमाणिकता स्वंय सिद्ध करता है परन्तु यह प्रमाणिकता तब ही प्रभावी हो पाती है जब इस प्रमाण को कोई सरकारी इकाई प्रमाणित करती है, ऐसा नहीं है कि इन 64 वर्षों में कोई कार्य नहीं हुआ, इन 64 वर्षों में अनेक गुणात्मक परिवर्तन हुये हैं, शिक्षा के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, औषधि निर्माण के क्षेत्र में व साहित्य सृजन के क्षेत्र में कई क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये हैं, मौलिकता में बिना छेड़–छाड़ किये यह परिवर्तन विकास की कहानी स्वंय चीख–चीख कर कह रहे हैं परन्तु इन परिवर्तनों का जो लाभ वास्तव में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्राप्त होना चाहिये था वह आज तक प्राप्त नहीं हो सका ! इसके मूल में जो तथ्य है वह यह है कि किसी भी सरकारी एजेन्सी नें गम्भीरता से हमारे दावों को नहीं परखा और न ही हमारे कार्यों का वास्तविक मूल्यांकन हो पाया, काम करने की पूरी छूट थी और है इसी छूट ने बिना किसी नियंत्रण के इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अराजकता को जन्म दिया तमाम सारी संस्थायें जन्मीं, कुछ पटल पर आयीं, कुछ कागज़ी बनकर दम तोड़ गयीं इन्हीं गतिविधियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के पहिये को आगे बढ़ने से रोका और गम्भीर स्थिति का सामना भी करवाया, खैर जो कुछ भी था गुज़र गया, आज नया सुप्रभात हमारा इन्तेज़ार कर रहा है कि हम कार्य करें और अपने इन कार्यों से समाज व आम जनमानस को लाभान्वित करें परन्तु साथ ही साथ यह भी ध्यान रखें कि हम जो भी कार्य करें उसके मूल्यांकन के लिये अपने प्रयास भी करें, हमारे यहाँ बहुत काम हुआ है और उनके परिणाम भी अच्छे आये हैं लेकिन वास्तविक प्रचार न होने के कारण हमारे कार्यों को वह स्थान नहीं मिल पाया जो मिलना चाहिये ! कैन्सर, एड्स व कुष्ठ जैसी ला–इलाज व गम्भीर बीमारियों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति ने अपनी छाप छोड़ी है एवं आशातीत सफलता भी अर्जित की है परन्तु सरकारी एजेन्सियों के सहयोग नहीं मिलने के कारण जन समर्थन नहीं मिल पा रहा है अस्तु यह बहुत आवश्यक है कि बिना किसी विलम्ब के हम अपने कार्यों का मूल्यांकन करवाने का प्रयास किसी सरकारी एजेन्सी से अवश्य करें इसका लाभ मिलता है, हम दो उदाहरण यहां देना चाहेंगे

1) उ0प्र0 के पूर्वी ज़िलों जैसे गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया, बस्ती, सिद्धार्थनगर के क्षेत्रों में इन्सेफलाइटिस (दिमांगी बुखार) महामारी के रुप में जान व माल दोनों को ही प्रभावित करता है।

गत 20 वर्षों से क्षेत्रीय निवासियों के लिये कहर बनकर आता है, इससे लोगों में दहशत का भाव पैदा हो जाता है।

प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां अभी तक इसपर नियन्त्रण नहीं पा सकी हैं, कुछ माह पहले गोरखपुर के एक कार्यक्रम में एक दवा निर्माता व चिकित्सक ने इन्सेफलाइटिस पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों के प्रभाव पर चर्चा की, लोगों ने इसे हाथों–हाथ लिया चिकित्सक महोदय ने स्वंय बताया कि मीडिया में भी इस बात की चर्चा हुयी अगर हमारे चिकित्सक महोदय इस अवसर का लाभ उठाते एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों की उपयोगिता सिद्ध करते तो सम्भवतः स्थिति कुछ बन जाती।

2) बिहार राज्य के पटना के एक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक ने कैन्सर के हाई–प्रोफाइल रोगी पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों की उपयोगिता सिद्ध कर दी इसका प्रचार भी खूब हुआ, प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जी खोलकर सराहना की आज भी तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री व वर्तमान सांसद जहाँ कहीं भी किसी चिकित्सा विधा से सम्बंधित कार्यक्रम में जाते हैं तो वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चर्चा करते नहीं अघाते इसका लाभ यह तो हुआ कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चर्चा तो खूब हुयी, सम्बंधित चिकित्सक की दुकान भी खूब चल निकली।

यहाँ पर देखा जाये तो जो लाभ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को होना चाहिये वह नहीं हुआ इसलिये हम सब को मिलकर यह प्रयास करना होगा कि व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कार्य करें एवं अपने नज़दीक जो कोई भी सरकारी एजेन्सी हो जैसे पी0एच0सी0, सी0एच0सी0 आदि से सम्पर्क कर अपने कार्यों के बारे में बतायें।

MISSING

Missing from Agra
Name : AMAN उर्फ
Dipendra Kushwah
Age : about 17yrs.
Any information
Please contact
Dr. Dilip Kushwah
cell: 09760488770
09412850074

समन्वय बनाना ही होगा !

जब किसी आन्दोलन को विभिन्न विचार धारा के विभिन्न संगठनों द्वारा चलाया जाता है तो उस आन्दोलन की सफलता तब तक संदिग्ध रहती है जब तक कि विचारों में एक रूपता नहीं होती है, विचारों में एकात्मता होना तो मुश्किल होता है परन्तु एक राय तो बन ही सकती है, एक ही बिन्दु पर लोगों के विचार अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन जब उद्देश्य एक हों और उद्देश्य भी जनहित से जुड़ा हो तो बहुत सारे बिन्दुओं पर आदमी हठ छोड़कर समन्वय स्थापित कर ही लेता है, कहा भी जाता है कि समन्वय ही सफलता की कुंजी होती है। वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन जिस स्थिति पर है वहाँ पर समन्वय का होना अति आवश्यक है इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक ऐसा विषय है जिसका उद्देश्य एक है इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन से जुड़ा हुआ हमारा हर साथी यही चाहता है कि एन केन प्रकारेण इस चिकित्सा पद्धति को पूर्ण शासकीय संरक्षण प्राप्त हो और इस चिकित्सा पद्धति से जुड़ा हर व्यक्ति चाहे वह चिकित्सक हो, शिक्षक हो, दवा निर्माता हो, साहित्य सृजनकर्ता हो या फिर अनुसंधान के क्षेत्र में जुड़ा हो, अभिमान के साथ खड़ा होना चाहता है और इस अभिमान को जीवित रखने के लिए अब यह परम आवश्यक हो गया है कि अपनी परायी छोटी बड़ी, अधिकारी बिना अधिकारी की भावना से ऊपर उठकर एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करे जहाँ से विकास की धारा बह निकले। लगभग देश के हर राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की मांग उठ रही है और लगभग 20 राज्यों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विभिन्न संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता पाने का दावा ठोक रहे हैं।

सब अपने–अपने स्तर से प्रयास भी कर रहे हैं जिसको जो समझ में आ रहा है वह कर गुज़रता है इसमें वह तनिक भी विचार नहीं करता कि उसका यह अविवेकपूर्ण निणर्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कितना नुकसान पहुँचा सकता है। जब हम इस पर विचार करते हैं कि ऐसा क्यों है ?तो जो कटु सत्य सामने आता है वह भयावह है इसका चित्रांकन और प्रस्तुतीकरण कहीं से भी प्रगति का सन्देश नहीं देता है।

कुछ वर्षों पूर्व तक अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग के सिद्धान्त पर अपने ढंग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को संचालित किया जा रहा था अब वह संचालन मात्र मुश्किल ही नहीं बल्कि दुरूह भी हो गया है ऐसी स्थिति में हमारे यह साथी अपने आप को लड़ाई में बने रहने का प्रर्दशन करने के लिए तरह तरह के कार्य करते हैं।

इतिहास गवाह है कि सहभागिता से ही विजय पायी जाती है राष्ट्रीय अन्दोलनों में सहभागिता व समान विचारों की संलिप्तता का होना आवश्यक होता है। देश की आज़ादी की लड़ाई देश के हर कोने से लड़ी गयी इस लड़ाई में जाति धर्म, मज़हब, भाषा, संस्कृति आड़े नहीं आयी, विचारों में ज़रूर विरोधाभास रहा कोई उदारपंथी तो कोई उग्रपंथी परन्तु एक सी विचारधारा दोनों में थी वह थी राष्ट्र के प्रति प्रेम, हमें इसी प्रेम भाव को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में भी जीवित करना है और लोगों को यह शिक्षित करना है कि जो भी लोग इस आन्दोलन में कूदे हैं उन्हें लाभ हानि से ऊपर उठकर सिर्फ चिकित्सा पद्धति के लिए कार्य करना है हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि जब देश आज़ाद हुआ तो आज़ादी का आनन्द छोटे बड़े बाल युवा वृद्ध सबने अपने स्तर से उठाया ठीक यही हाल इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भी होगा जब कभी यह आन्दोलन अपनी अन्तिम प्रणिति को प्राप्त करेगा तो लाभ से कोई भी वंचित न रहेगा।

लेकिन यह तभी सम्भव है जब हम अपने विचारों में एकरूपता लायें और समन्वय स्थापित करते हुए आन्दोलन को गति दें।

जिज्ञासुओं के लिए
शुभ उपहार

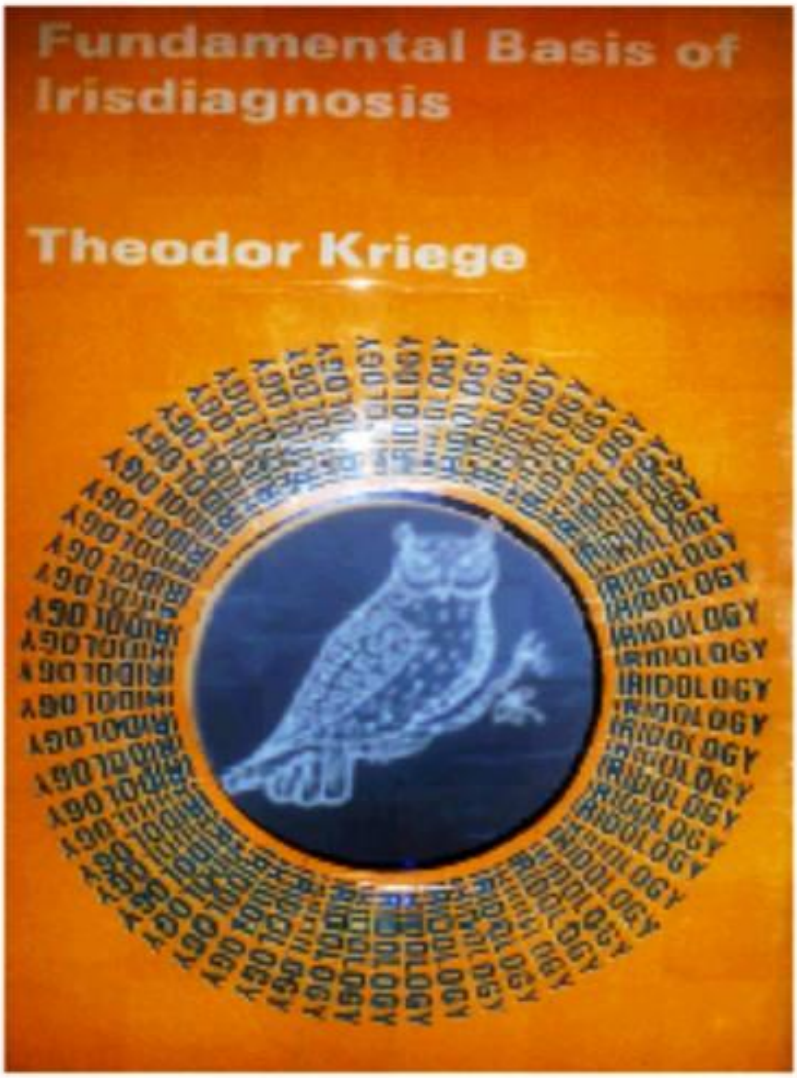

कनीनिका निदान
आइरिस विज्ञान की
एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page
&
Price ₹40 only
डाक खर्च अतिरिक्त
आपके लिये अब
ऑनलाइन बुकिंग
की भी सुविधा
अपना नाम, पूरा पता
डाक का पिनकोड
+91 9415074806
9450153215
9450791546
9415486103
पर S.M.S. कर सकते हैं
Conditions applied
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0
127/204 एस जूही, कानपुर–208014